गद्यांश-1

भूमि का निर्माण ---------- आवश्यक धर्म है।

प्र०-1 गद्यांश के लेखक और शीर्षक का नाम लिखिए।
उ०— लेखक- वासुदेवशरण अग्रवाल
पाठ/शीर्षक का नाम- राष्ट्र का स्वरूप।

प्र०-2 भूमि के प्रति मानव जाति का क्या कर्त्तव्य है?
उ०— इस भूमि के प्रति सचेत रहें और इसका रूप किसी भी दशा में विकृत न होने दें।

प्र०-3 पृथ्वी के प्रति हमारा क्या धर्म है?
उ०— प्रारम्भ से अन्त तक पृथ्वी के भौतिक स्वरूप के बारे में जानें, उसके रूप, सौंदर्य, उपयोगिता एवं महिमा को भली भाँति पहचानें।

प्र०-4 किस प्रकार की राष्ट्रीयता को लेखक ने निर्मूल कहा है?
उ०— जो राष्ट्रीयता पृथ्वी के साथ नहीं जुड़ी है वह निर्मूल है।

प्र०-5 यह पृथ्वी सच्चे अर्थों में क्या है?
उ०— यह पृथ्वी सच्चे अर्थों में समस्त विचार धाराओं की जननी है।

प्र०-6 भूमि का निर्माण किसने किया, और कब से है?
उ०— भूमि का निर्माण देवों ने किया है, और यह अनन्त काल से है।

प्र०-7- निर्मूल, आद्योपांत, पल्लवित, पार्थिव आदि शब्दों का अर्थ लिखिए।

उ०— • निर्मूल — जड़हीन • आद्योपांत — आदि से लेकर अंत तक

• पल्लवित — फैलना विस्तृत • पार्थिव — पृथ्वी से सम्बंधित

प्र०-8 - रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उ०— जो राष्ट्रीयता ..... आवश्यक धर्म है।

व्याख्या :—

डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल जी कहते हैं कि जो विचारधारा पृथ्वी से सम्बंधित नहीं होती है, वह आधारहीन होती है। वस्तुत: हम पृथ्वी के साथ जितनी गम्भीरता से जुड़े रहेंगे उतनी ही राष्ट्रीयता की भावनाएं गहरी होंगी। अत: पृथ्वी के भौतिक स्वरूप की प्रारम्भ से लेकर अंत तक जितनी अधिक जानकारी रखेंगे, उतना ही अच्छा राष्ट्रीय भाव पनपेगा। हमारा आवश्यक धर्म है कि हम पृथ्वी की सुन्दरता, उपयोगिता और उसकी महिमा को पहचानें।

Gyansindhu Gyansindhu Gyansindhu

गद्यांश-2

धरती माता की कोख में .... भी आवश्यक है।

प्र०-1 हमारे भावी आर्थिक अभ्युदय के लिये किसकी जाँच पड़ताल अत्यन्त आवश्यक है?

उ०— पृथ्वी की कोख में भरी अमूल्य निधियों, धातुओं और पृथ्वी की देह को सजाने वाली अनेक प्रकार की मिट्टियों आदि की सही प्रकार से जाँच पड़ताल अत्यंत आवश्यक है।

प्र०-2- उपर्युक्त गद्यांश में राष्ट्र निर्माण के किस प्रथम तत्व को दर्शाया गया है?

उ०— प्रथम तत्व 'भूमि' अथवा पृथ्वी का महत्व दर्शाया गया है।

प्र०-3- धरती को वसुंधरा क्यों कहते हैं?

उ०— क्योंकि पृथ्वी ने अपने में अनेक प्रकार के मूल्यवान रत्नों को धारण किया है।

प्र०-4- पृथ्वी की देह को किसने और किससे सजाया है?

उ०— पृथ्वी की देह को दिनरात बहने वाली नदियों ने पहाड़ों को पीस-पीसकर सजाया है।

प्र०-5- अमूल्य निधियाँ कहाँ भरी हैं?

उ०— धरती माता की कोख में अमूल्य निधियाँ भरी हुई हैं।

प्र०-6— रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

हमारे भावी आर्थिक ..... प्रतीक बन जाते हैं।

व्याख्या :—

अग्रवाल जी पृथ्वी की महत्ता का प्रतिपादन करते हुए कहते हैं कि हमारे भावी राष्ट्रीय आर्थिक विकास की दृष्टि से इन सब तथ्यों का परीक्षण परम आवश्यक है। पृथ्वी में उत्पन्न विभिन्न प्रकार के पत्थर कुशल कारीगरों के द्वारा सजाए सँवारे जाने पर सौन्दर्य के अद्भुत प्रतीक बन जाते हैं।

Gyansindhu Gyansindhu Gyansindhu

गद्यांश-3

पृथ्वी और आकाश के अंतराल ------ के समान हैं।

प्र०-1- पृथ्वी और आकाश के बीच में तथा समुद्र में कौन-सी अपार सम्पदा देखने को मिल जायेगी?

उ०— अनेक नक्षत्र विभिन्न प्रकार की गैसें आदि तथा समुद्र में जलचर विभिन्न प्रकार के खनिज और रत्न जैसी सम्पदा देखने को मिल जायेगी।

प्र०-2 राष्ट्र अथवा राष्ट्र निवासियों को कब तक सुप्त समझना चाहिए।

उ०— राष्ट्र तथा राष्ट्र निवासियों को तब तक सुप्त समझना चाहिए जब तक राष्ट्र के नवयुवक जिज्ञासु और जागरूक नहीं होते।

प्र०-3- गम्भीर, जलचर, अंतराल, जिज्ञासा आदि शब्दों का अर्थ लिखिए।

गम्भीर - गहरा
जलचर - जल में चलने वाले
अंतराल - मध्य में
जिज्ञासा - जानने की इच्छा

गद्यांश -4

मातृभूमि पर निवास - - - - - - - - - - पृथ्वी का पुत्र है।

प्र०-1 राष्ट्र की कल्पना कब असम्भव है?

उ०— पृथ्वी हो और मनुष्य न हो तब राष्ट्र की कल्पना असम्भव है।

प्र०-2- पृथ्वी और जन दोनों मिलकर क्या बनाते हैं?

उ०— राष्ट्र का स्वरुप बनाते हैं।

प्र०-3- पृथ्वी कब मातृभूमि की संज्ञा प्राप्त करती है?

उ०— जन के कारण ही पृथ्वी मातृभूमि की संज्ञा प्राप्त करती है।

प्र०- 4 सम्पादित, संज्ञा, साम्मिलन व जन शब्दों के अर्थ लिखो?

उ०— सम्पादित — पूरा होना संज्ञा — नाम
साम्मिलन - मिलाप जन — मनुष्य/लोग

गद्यांश - 5

माता पृथ्वी को प्रणाम .... ध्यान देना चाहिए।

प्र०-1. "यह प्रणाम भाव ही भूमि और जन का दृढ़ बंधन है।" पंक्ति का आशय क्या है?

उ०— पंक्ति का आशय यह है, कि अपनी धरती के प्रति आदर भाव व्यक्ति और पृथ्वी के सम्बंध को दृढ़ करता है।

Gyansindhu Gyansindhu
GyansindhuGyansindhu Gyansindhu

प्र०-2. पृथ्वी के वरदानों में कुछ पाने का अधिकार किसे होता है?

उ०— पृथ्वी के अंतराल में छिपी अपार सम्पदा में कुछ पाने का अधिकार केवल उन्हे होता है, जो पृथ्वी माता का सत्कार करते हैं।

Gyansindhu

प्र०-3- धरती माता के प्रत्येक सच्चे पुत्र का क्या कर्तव्य है?

उ०— सच्चे पुत्र का यह कर्तव्य है कि वह अपनी धरती माता से स्नेह करे, निःस्वार्थ भाव से उसकी सेवा करे।

प्र०-4- भूमि और जन का दृढ़ बंधन किसे कहा गया?

उ० — प्रणाम भाव को।

प्र०-5- पुत्र का स्वाभाविक कर्तव्य क्या है?

उ० — माता के प्रति अनुराग और सेवाभाव।

प्र०-6- अधः पतन, अनुराग, चिरजीवन, दृढ़भित्ति व निष्कारण शब्दों के अर्थ लिखिए।

उ० — अधः पतन — अवनति
चिरजीवन — सम्पूर्ण जीवन
निष्कारण — अकारण / बिना किसी कारण के
अनुराग — ~~प्रेम~~ / स्नेह
दृढ़भित्ति — मजबूत दीवार

गद्यांश - 6

माता अपने सब पुत्रों —.....—सुध हमें लेनी होगी।

प्र०-1- पुत्रों को समान भाव से कौन रखती है?

उ०— माता अपने सभी पुत्रों को समान भाव से रखती है।

प्र०-2- समान अधिकार का भागी कौन है?

उ०— जो मातृभूमि के उदय के साथ जुड़ा हुआ है।

प्र०-3- माता अपने पुत्रों को किस भाव से चाहती है?

उ०— समान भाव से।

प्र०-4- राष्ट्र के प्रत्येक अंग की सुध हमें क्यो लेनी होगी?

उ०— किसी एक अंग को छोड़कर राष्ट्र आगे नहीं बढ़ सकता, इसलीए राष्ट्र के प्रत्येक अंग की सुध हमें लेनी होगी।

प्र०-5 - सौहार्द्र, प्रांगण, सुध, नाना, अखण्ड, समन्वय तथा पुर आदि शब्दों के अर्थ लिखिए।

उ० — सौहार्द्र - मैत्री भाव, भाईचारा प्रांगण - आँगन

सुध - खबर नाना - विभिन्न

अखण्ड - जीसके टुकड़े न हों समन्वय - संयोग

पुर - बस्ती

प्र०-6 - किसकी दृष्टि से लोग एक दूसरे से आगे-पीछे हो सकते हैं?

उ० — रहन सहन की दृष्टि से।

गद्यांश – 7

जन का प्रवाह अनन्त - - - - - - - - निर्माण करना होता है।

प्र०-1- किसका प्रवाह अनन्त होता है?

उ० — जन का प्रवाह अनन्त होता है।

प्र०-2- राष्ट्रीय जन ने किसके साथ तादात्म्य स्थापित किया है?

उ० — भूमि के साथ तादात्म्य स्थापित किया है।

प्र०-3- जन का संततवाही जीवन किसकी तरह है?

उ० — नदी के प्रवाह की तरह है।

प्र०-4- राष्ट्रीय जन का जीवन भी कब तक अमर है?

उ० — जब तक सूर्य की रश्मियाँ नित्य प्रातः काल भुवन को अमृत से भर देती हैं, तब तक राष्ट्रीय जन का जीवन भी अमर है।

प्र०-5- 'जन का प्रवाह' से क्या तात्पर्य है?

उ० — 'जन का प्रवाह' से तात्पर्य जीवन की गतिशीलता से है।

प्र०-6- राष्ट्र निवासी जन किसके समान आगे बढ़ने के लिए अजर-अमर हैं?

उ० — राष्ट्र निवासी जन सूर्य की रश्मियों के समान आगे बढ़ने के लिए अजर-अमर हैं।

प्र०-7- उत्थान के घाटों का निर्माण कैसे होगा?

उ० — कर्म और श्रम के द्वारा।

प्र०-8- रश्मि, संततवाही, भुवन, उत्थान आदि शब्दों के अर्थ लिखिए।

उ० — रश्मि — किरण संततवाही - निरन्तर बहने वाला

भुवन — संसार उत्थान — उन्नति

गद्यांश - 8

राष्ट्र का तीसरा अंग .... समन्वय पर निर्भर है।

प्र०-1- भूमि और जन के पश्चात राष्ट्र के किस तीसरे अंग पर इस गद्यांश में लेखक ने विचार किया है?

उ० — लेखक ने भूमि और जन के पश्चात राष्ट्र के तीसरे अंग संस्कृति पर विचार किया है।

प्र०-2 संस्कृति धरती के जन का किस रूप में अभिन्न एवं अनिवार्य अंग है?

उ० — जिस प्रकार जीवन के लिए श्वास प्रश्वास अनिवार्य है उसी प्रकार संस्कृति भी धरती के जन का अभिन्न अंग है।

प्र०-3-"बिना संस्कृति के जन की कल्पना कबंध मात्र है"? का आशय?

उ० — जिस प्रकार बिना मस्तिष्क के मनुष्य को व्यक्ति नहीं कहा जा सकता वैसे ही बिना संस्कृति के राष्ट्र की कल्पना नहीं की जा सकती।

प्र०- 4- "जीवन के विटप का पुष्प संस्कृति है।" पंक्ति का आशय ?

उ० — जीवनरूपी वृक्ष का पुष्प संस्कृति है, अर्थात समाज का ज्ञान और उस ज्ञान के प्रकाश में किए गए कर्त्तव्यों के सम्मिश्रण से जो जीवन शैली उभरती है, वही संस्कृति है।

प्र०-5- राष्ट्र की वृद्धि कैसे सम्भव है ?

उ० — संस्कृति के विकास और अभ्युदय के द्वारा।

प्र०-6- किसी राष्ट्र का लोप कब हो जाता है ?

उ० — जब भूमि और जन को उसकी संस्कृति से अलग कर दिया जाए तो राष्ट्र का लोप समझना चाहिए।

प्र०-7- भूमि और जन के अलावा देश के लिए और क्या महत्वपूर्ण है ?

उ० — संस्कृति।

गद्यांश - 9

जंगल में जिस प्रकार ——— सुखदायी रूप है।

प्र०-1- जंगल में लता, वृक्ष और वनस्पति किस अदम्य भाव के कारण अविरोधी स्थिति प्राप्त करते हैं?

उ०— जंगल में लता, वृक्ष और वनस्पति अपने अदम्य भाव से उठते हुए पारस्परिक सम्मिलन एवं एकता की भावना से अविरोधी स्थिति प्राप्त करते हैं; जैसे लताएँ वृक्षों से लिपटी रहती हैं और वृक्ष उन्हें सहारा प्रदान करते हैं।

प्र०-2- राष्ट्र के जन किसके द्वारा एक-दूसरे के साथ मिलकर राष्ट्र में रहते हैं?

उ०— राष्ट्र के जन अपनी संस्कृतियों के द्वारा एक दूसरे के साथ मिलकर राष्ट्र में रहते हैं।

प्र०-3 जल के अनेक प्रवाह किसके रूप में मिलकर कहाँ एकरूपता प्राप्त करते हैं?

उ०— नदियों के रूप में मिलकर समुद्र में एकरूपता प्राप्त करते हैं।

प्र०-4- किस प्रकार के जीवन को राष्ट्र का सुखदायी रूप कहा गया है?

उ०— समन्वययुक्त जीवन को।

प्र०-5- अदम्य, पारस्परिक, अविरोधी, समन्वय आदि शब्दों के अर्थ लिखिए।

उ०— अदम्य — बिना किसी दबाव के पारस्परिक - आपसी

अविरोधी - बिना विरोध के समन्वय - संयोग

गद्यांश - 10

साहित्य, कला, नृत्य - - - - - - - स्वास्थ्यकर है।

प्र०-1. राष्ट्रीय जन किन रूपों में अपने मानसिक भावों को प्रकट अथवा अपने मनोभावों को किन रूपों में प्रकट करते हैं?

उ० — राष्ट्रीय जन साहित्य, कला, नृत्य, गीत, आमोद-प्रमोद आदि के माध्यम से अपने मनोभावों को प्रकट करते हैं।

प्र०-2. आत्मा का विश्वव्यापी आनन्द-भाव किन रूपों में साकार होता है?

उ० — आत्मा का विश्वव्यापी आनन्द-भाव संस्कृति के विभिन्न माध्यमों, जैसे: नृत्य कला, गीत, साहित्य, आमोद-प्रमोद आदि रूपों में ही साकार होता है।

प्र०-3. संस्कृति के आनंद पक्ष को स्वीकारते हुए कौन आनंदित होता है?

उ० — जो सहृदय यानी उदार और व्यापक हृदय वाला होता है।

प्र० – 4- विश्वव्यापी, आन्तरिक आनंद, आमोद-प्रमोद, सहृदय, आदि शब्दों के अर्थ लिखिए।

विश्वव्यापी – सम्पूर्ण संसार में व्याप्त

आंतरिक आनंद – आत्मिक आनंद

आमोद - प्रमोद – मनोरंजन

सहृदय – अच्छे, उदार और व्यापक हृदय वाला व्यक्ति।

* * - * - * - * - * - *